आश्र.प.

कासुतः॥ ५८॥ संजयंचमहालानंरुपंचापिमहारथं॥ अनुनेतुमिहेच्ठामिभवद्भिधाधिपं॥ ५९॥ म्हायतेमेमनोहोद्म्खं रुष्टेनवाग्यायामेनचेवह॥६०॥ इत्युक्तासतुघमांमाटद्वोराजाकुरुद्दहः॥गांघारींशिश्रियेषीमान्सहसेवगतासुवत्॥६१॥ तंतु होरवं॥ आतिराजागमतीबांकोतेय:परवीरहा॥ ६२॥ युधिष्ठिरउवाच यस्यनागसहस्रेणश्तसंस्येनवैबलं ॥ सोयंनारी वत्॥ ६३॥ आयसीप्रतिमायेनमीमसेनस्यसापुरा॥ चूर्णीकताबलबतासाबलामाश्रितःबियं ॥ ६४ ॥ घिगस्तमामधम्<mark>ज</mark>ाध प्रिथिवीपालःश्तेयमत्योचितः ॥६५॥ अहमप्युपवत्स्यामियथैवायंगुरुमंम॥ यदिराजानभुंकेयंगांधारीच्यश्सिवनी ॥६६॥ इत्युक्ताधमराजानंवपमानंकतांजिति॥ उ | · · 2 | | · 2 | | · 2 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · 3 | | · बैश्पायनउवाच ग्रुषितस्त्रया॥ टइंमामप्यनुज्ञातुमहंसित्वंनरायिप ॥ ५७॥ [दिधिक्चमेश्रुतं॥यत्कत चरमस्योषतःप्रज्ञिष्धुः वपरिशुष्यति॥ वयसाचप्र **ट्रष्ट्रासमासानावसङ्गा**मेवब व्यपाधित्यश्तराजागतास

तत्रिस्यपाणिनाराजन्जलश्रीतेनपांडवः॥ उर्रामुखंचश्नकःपयमाजितधमींवेत् ॥६७॥ तेनर्त्नोषांधमतापुण्यनचसुगंधिना॥ पाणि

नापह ॥ ६८॥ धृतराष्ट्रवाच स्पश्मांपाणिनाभूयःपरिष्वजचषांडव ॥ जीवामीवातिसंस्पश्रांत्तवराजीवलोचन॥ ६ ९॥

ामनुजाधिप ॥ पाणिभ्यांहिपरिस्प्रधुंत्रीणनंहिमहन्मम॥ ७०॥ अष्टमोत्यवकालोयमाहारस्यकतस्यमे॥ येनाहंकुरुशाद्रुलश् क्रो यकुरुकुलाहह ॥ ७३॥ वश्षायनउवाच एवमुकस्तुकातियः,पित्राज्येष्ठेनभारत॥पस्पर्मसर्गात्रेषुसोहादांन्शनैसादा॥ न्धृतराष्ट्रोमहीपतिः॥ बाहुभ्यांसंपरिष्वज्यमूध्योजिघतपांडवं ॥ ७५ ॥ षिदुराद्यश्चतेसषैरुरुदुर्देःखिताभ्रश्ं॥ अतिदुःखानुरा % ॥ गांपारीत्वेवधमेझामनसोद्दहतीभश् ॥ दुःखान्यधारयद्राजन्मेवमित्यवचाघवीत्॥ ७७॥ इतरास्तुरिक्षयःसवाःकृत्यासहसु दे:परिवार्यस्थिताभवन् ॥ ७८॥ अथाब्रवीसुनैविक्यंधृतराष्ट्रोयुधिष्ठिरं॥ अनुजानीहिमांराजंस्तापस्येभरतर्षभा॥ ७९॥ ग्लायते गामश्रायमत्ययेकतस्वामाभेयाचता॥ततोग्लानमनास्तातनष्संज्ञइवाभवं ॥ ७२॥ तवाचतरसप्रस्यंहस्तस्पश्राममप्रभां॥ मेमनस्तातभूयोभूयःप्रजल्पतः॥नमामतःपरंपुत्रपरिक्केष्ट्रमिहार्हसि॥८०॥ मिनविचेष्टितं॥ ७१ ॥ व्यार ड्यासजीवितास्मीतिम*स* दुः विताः॥ नेत्रैरागतिक्रे न्यानचतवाद्याताम् स्डााः जाननोचुः किचनपांडवं॥ । ५४ ॥ उपत्रभ्यततः प्राण्

Digitized by Google

स्पशैनराज्ञःसराजासज्ञामः

वश्पायनउवाच